ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE-VI | Nov. | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

इक्कीसवीं सदी का महिला लेखन : स्थिति एवम् गति

आत्मकथा विधा के विशेष संदर्भ में (दोहरा अभिशाप, शिकंजे का दर्द)

प्रा. पी.एम. आठवले,

के.बी.पी.कॉलेज, इस्लामपूर.

"साहित्य को जीवन की आलोचना कहा जाता है।" साहित्य की विविध विधाओ में से उस परिभाषा को सार्थक करने में सिध्द हुई विधा है आत्मकथा। अन्य विधाओं की अपेक्षा आत्मकथाओं में जिए हुए जीवन का, भोगे हुए क्षणों का, झेले हुए सुख दुःखों का यथार्थ चित्रण इसमें होता है । कवि हरिवंशराय बच्चन ने " आत्मकथा को जीवन की तस्वीर कहा है ।"

आत्मकथा विधा का भारतेंदु युग से लेकर आधुनिक युग तक निरंतर विकास हुआ है। धीरे–धीरे इस विधा में लेखको के साथ–साथ लेखिकाओं ने भी रूचि लेकर लेखन आरंभ किया और स्वतंत्र्योंत्तर काल में अनेक लेखिकाओं की आत्मकथाएं प्रकाश मे आयी है।

इक्कीसवीं सदी क्रांति और प्रगति की सदी है इस सदी ने पीडितो, शोषतों को वाणी देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है । इन शोषतों में मुख्यतः स्त्री (महिला) भी है । भारतीय संविधान ने महिलाओं को लिखित रूप में सभी अधिकार दे दिए है । वास्तविकता तो महिलाएँ ही जानती है, उन्हे कितने अधिकार, घर, परिवार और समाज व्दारा दिए गए है।महिलाओं ने धीरें – धीरें अपने अधिकारों की चर्चा साहित्य के माध्यम से करनी शुरू की।"जाके पैर न फटे बिवाई सों का जाने पीर पराई " उक्ति के अनुसार सभी महिलाओं ने उपन्यास कहानियों के माध्यम से अपनी आत्मकथाओं को दुनिया के सामने रखने का प्रयास किया है । परंतु कहानी,कविता और उपन्यास लिखते हुए जो पीडाएँ अव्यक्त रही है उन्हे व्यक्त करने के लिए आत्मकथा विधाओं को चुना हैं । लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में " सिर्फ स्त्रियों के सामाजिक, सांस्कृतीक स्थिति के भयानक यथार्थ पर से पर्दा हटाने का ही नही इसके प्रतिकार तथा प्रतिवाद की दिशा में विद्रोह के प्रति आवाज उठाने कार्य किया है।"स्त्री – मुक्ती और स्त्री सामर्थ्य समुचे विश्व के समक्ष एक सशक्त रूप में रखने का प्रयास किया है ।

इक्कीसवीं सदी में अनेक महिला लेखिकाओं ने आत्मकथाएँ लिखि है जैसे डॉ. सुशीला टाकभौरे – शिंकजे का दर्द, कौशल्य बैसंत्री – दोहरा अभिशाप, कृष्णा अग्निहोत्री – लगता नही है दिल मेरा , मैत्रेयी पुष्पा – कस्तुरी कुंडल बसै – गुडिया भीतर गुडिया, मन्नू भण्डारी – एक कहानी यह भी, प्रभा खेतान – अन्या से अनन्या, रमाशंकर आर्य – घुटन शिल्पायन, रमणिका गुप्ता – हाद से आदि लेखिकाओं ने अपने आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्रियों की जीवनगाथा प्रस्तुत की है ।

मेरी ट्रष्टि से इक्कीसवीं सदी की सबसे बडी उपलब्धि है दलित महिला लेखिकाओं ने अपनी पीडा, दर्द को दुनिया के सामने आत्मकथाओं के माध्यम से प्रस्तुत करके उनकी स्थिति पर हमें सोचने के लिए मजबूर किया है । इन आत्मकथाओं में प्रमुख है दोहरा अभिशाप – कौशल्य बैसंत्री की आत्मकथा और दूसरी है डॉ' सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा शिकंजे का दर्द । दोहरा अभिशाप – कौशल्य बैसंत्री द्वारा लिखी गयी पहिली दलित महिला की आत्मकथा है । इस आत्मकथा के माध्यम से लेखिका ने अपने जीवन का जींवत दस्तऐवज सामने रखा है । उनका कहना है दलित होना पाप, और शाप है, लेकिन दोहरा अभिशाप यह कि दलित स्त्री होना ।

कौशल्य बैसंत्री की आत्मकथा बताती है दलित स्त्री दूसरी स्त्रियों की तरह केवल स्त्री नही होती ।स्त्री होने के साथ – साथ वह दलित होने का दोष भी झेलती है । समाज में दलित और परिवार में स्त्री दोनों ही रूपों में वह उपेक्षा और उत्पीडन की शिकार है । उसका दर्द दोहरा है यह दलित समाज को अपना मूल्याकन करने की सीख देनेवाली आत्मकथा है ।

इस आत्मकथा में भूख, अशिक्षा, छुआ – छूत सुविधाओं का अभाव आदि का चित्रण किया है । भूख का दर्दनाक चित्रण करते हुए लेखिका लिखती है कि "कभी – कभी दो – दो वक्त वे चने – मुरमुरे खाकर रहते थे ।"

छुआ – छूत की अनिष्ठ प्रथा का वर्णन भी इसमें किया है इस प्रथा के बारें में वह लिखती है "मेरी समझ में नही आ रहा था कि मेरे हाथ लगाने से ऐसा क्या हो गया । जंगला का घर हमसे अच्छा नहीं था । घर में बकरियॉ बंधी थी, उनकी मलमूत्र की बहुत बदबू आ रही थी, फिर भी जंगला हमें छुआ – छूत बरतती थी".

अशिक्षा के कारण दलितों को विपरीत परिणामों को भुगतना पडता है इसका यथार्थ चित्रण अपनी बडी बहन के ग्यारह बच्चों का उदाहरण देकर किया है । सुविधाओं के अभाव से दलित बस्तियों में बिमारिया कैसे फैलती है इसका चित्रण करके आज भी दलित बस्तिओं में आज क्या सुधार हुए है उनकी हालत में क्या बदलाव आया है इसे सोचने के लिए विवश किया है ।

महिलाओं की जागृती का कार्य करते हुए वे लिखती है "आए दिन अखबारों में दलितों पर अत्याचार की खबरें छपती है । जब भी अत्याचार होते महिलाओं को ज्यादा

तकलीफे उठनी पडती । दलित महिलाओं को तो और भी ज्यादा ।" महिलाओं की समस्या को दूर करने का प्रयास भी करती रही ।

भारतीय स्वतंत्रता के साठ साल बाद भी जातीयता की दीवारें न टूट न समानता की मनोवृत्ति बनी है । एक निम्न, अछूत परिवार में पैदा होनेवाली डॉ. सुशीला टाकभौरे हर हालत का मुकाबला करके उच्च शिक्षा प्राप्त करती है । पीएच.डी होनेपर भी सर्वण उसे झाडूवाली जाति की मानते है । ऐसे संघर्षरत पढी लिखी महिला की आत्मकथा है शिकंजे का दर्द । सुशीला टाकभौरे कहती है "मेरी आत्मकथा दलित आत्मकथा होने के साथ एक स्त्री की भी आत्मकथा है ।" दलित स्त्री पुरूषों की अपेक्षा अधिक अपमान, तिरस्कार, अन्याय सहती है.उसका प्रमाण यह आत्मकथा प्रस्तुत करती है ।

पाठशाला में सबसें पीछे बिठाना, उसे छूने पर अध्यापक का नहाना , पाचवी कक्षा में चोरी न करने पर भी चोरी का आरोप सर्वणों द्वारा लगाना, पीने के लिए पानी न मिलना, अछूतों को कठोर दंड देना, नृत्य से दूर रखना आदि पीडाओं को निर्भयता से वास्तविक चित्रण किया है । घर पीरवार में भी ससुराल में सास–नणंद द्वारा होनेवाले अपमान, पति द्वारा बार–बार पीटाई होना, जेठानी–देवरानी की सेवा करना, भूखी रहना–रोना मगर किसी को कुछ न बताना आदि का यथार्थ चित्रण किया है ।

सुशील जी का प्राध्यापिका होने पर अत्याचार मालिका खण्डित नही हुई । बस किराए के लिए पति से पैसे मांगने पडते, तो कभी पैदल जाना पडता , भूखी रहती तब पति कहता "तेरी औकात सिर्फ बर्तन मांजनेवाली नौकरानी के बराबर है ।" आधुनिकता के युग में भी नारी कितनी स्वतंत्र है ? पढी लिखी हो, नौकरी करनेवाली हो लेकिन वह शोषित ही है, आधुनिकता का स्वांग रचनेवाले समाज व्यवस्था पर करारी चोट आत्मकथा के माध्यम से टाकभौरे जी ने की है ।

इन आत्मकथाओं को पढने के पश्चात ऐसा लगता है डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने नारी ... सुधार की दृष्टी से जो सपने देखे वह सच हो रहे है ऐसा लगता है ।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने जो मंजिल दलितों को दिखाई थी उस मंजिल तक पहुचने में यह आत्मकथाएँ सार्थक हो रही ऐसा मेरा मानना है ।निश्चित ही दलित युवा वर्ग इन आत्मकथाओं से प्रेरणा लेकर बदलेगाा और समाज में परिवर्तन करने में कामयाग होगा ।

सारांश :–

इक्कीसवीं सदी क्रांति और प्रगति की सदी है । इस सदी ने पीडितों, शोषितों को वाणी देने का महत्तवपूर्ण कार्य किया है । इन शोषितों में मुख्यतः स्त्री भी है – महिला आत्मकथाकारों ने अपनी आत्मकथाओं में न सिर्फ स्त्रियों के सामाजिक,

सांस्कृतिक स्थिति के भयावह यथार्थ पर से पर्दा हटाने का ही नहीं इसके प्रतिकार तथा प्रतिवाद की दिशा में विद्रोह के प्रति आवाज उठाने का कार्य किया है ।

इक्कीसवीं सदी की महिला लेखन की सबसे बडी उपलब्धि है दलित महिला आत्मकथाकारों की आत्मकथाएँ – दोहरा अभिशाप कौशल्या बैसंत्री और शिकंजे का दर्द डॉ सुशीला टाकभौरे इसमें भुख अशिक्षा , छुआ छुत सुविधाओंका आभाव , महिला जागृति आदि पर प्रकाश डाला है साथ ही स्वतंत्रताकी साठ साल बाद भी जातीयता की दीवारें न टुटी हैं न समानता की मनोवृत्ति बनी है । इस यथार्थ का मुकाबला करके स्त्रीया पढ रही है , नौकरी कर रही है अपने पैरो पर खडी होती दिखाई दे रही है। डॉ बाबासाहब आंबेडकर जी ने जो राह दलितो कों दिखाई थी उस राह पर चलनें में दलित महिलाएँ सक्षम हो रही है । आवष्यही ये आत्मकथाएँ युवतीयों के लिए हमेंषा प्रेरणादाई रहेगी ।

संदर्भ ग्रंथ–

1. दलित साहित्य षोध एवं दिषा –डॉ. भरत सगरे.
2. भारतवाणी –अप्रैल 2013.
3. अनभै –स्त्री विषेशांक – दिसंबर 2010
4. हिंदी आत्मकथा स्वरूप और विकासक्रम–डॉ. सविता सिंह
5. महिला आत्मकथा लेखन में नारी –डॉ.रघुनाथ देसाई.